CEDSI
CENTRE OF EXCELLENCE FOR DAIRY SKILLS IN INDIA

CEDSI TIMES

Your Skilling Partner...

यूपी सरकार ने नंद बाबा दूध मिशन योजना शुरू की किया

यूपी की राज्य सरकार ने 1,000 करोड़ रुपये की लागत से नंद बाबा दुग्ध मिशन योजना शुरू की है। दुग्ध उत्पादकों को डेयरी सहकारी समितियों के माध्यम से गाँवों में उचित मूल्य पर अपना दूध बेचने की सुविधा प्रदान करने के लिए नंद बाबा दुग्ध मिशन योजना लागू की गई है।

कैबिनेट मंत्री, पशुधन और डेयरी विकास विभाग, धर्मपाल सिंह ने कहा कि विभाग राज्य में ग्रामीण अर्थव्यवस्था के विकास को सुनिश्चित करने, किसानों को उनके दूध के लिए लाभकारी मूल्य प्रदान करने और कृषि आधारित बुनियादी ढांचे को मजबूत करने के लिए निरंतर प्रयास कर रहा है। इस मिशन के तहत, उत्पादकों के गांवों में ही दूध की बिक्री की सुविधा के लिए डेयरी किसान उत्पादक संगठन (डेयरी एफपीओ) बनाने का प्रस्ताव है।

वित्तीय वर्ष 2023-24 में पायलट प्रोजेक्ट के तौर पर राज्य के कई जिलों में पांच डेयरी एफपीओ स्थापित करने की योजना है, जिसमें महिलाओं की भी अहम भूमिका होगी|

जयपुर जिला सहकारी दुग्ध संघ ने लांच की आकर्षक आइसक्रीम

जयपुर (राजस्थान) जिला उत्पादक सहकारी दुग्ध संघ, जो सरस के ब्रांड नाम से अपने उत्पाद बेचता है, ने बुधवार को आइसक्रीम के प्रीमियम और अद्भुत वेरिएंट लॉन्च किए।

“आइसक्रीम चार प्रकारों में उपलब्ध है और जयपुर के विभिन्न हिस्सों में फैले बूथों के माध्यम से उपभोक्ताओं को उपलब्ध कराई जाएगी। हम आइसक्रीम बेचने के लिए जयपुर के भीड़-भाड़ वाले स्थानों पर विभिन्न मोबाइल रिक्शा भी तैनात करेंगे", ओपी पुनिया ने भारतीय सहकारिता संवाददाता से बात करते हुए कहा।

सुषमा अरोड़ा, सीएमडी राजस्थान को-ऑपरेटिव डेयरी फेडरेशन लिमिटेड ने जयपुर डेयरी के अध्यक्ष ओम प्रकाश पुनिया, एमडी डॉ कुलराज मीणा और अन्य की उपस्थिति में इसे लॉन्च किया।

उन्होंने आगे कहा, "जयपुर डेयरी द्वारा शुरू की गई आइसक्रीम वनस्पति तेल से नहीं दूध वसा से बनाई गई है। बेहतरीन सामग्री का उपयोग करके आइसक्रीम बनाई जाती है। संयंत्र की क्षमता प्रति दिन 15 टन है”|

एनडीआरआई ने दूध में मिलावट की जांच के लिए टेस्ट विकसित किया है

आईसीएआर-नेशनल डेयरी रिसर्च इंस्टीट्यूट (एनडीआरआई) के वैज्ञानिकों ने रंग विकसित करने वाले अभिकर्मकों की मदद से दूध में सोर्बिटोल की मिलावट का पता लगाने के लिए एक रैपिड टेस्ट विकसित किया है।

सॉर्बिटोल एक रसायन है जो चीनी शराब की श्रेणी में आता है और आमतौर पर नमी को संरक्षित करने और कुछ खाद्य उत्पादों में बनावट जोड़ने के लिए प्रयोग किया जाता है।

परीक्षण को संस्थान के डेयरी रसायन विज्ञान विभाग के डॉ. विवेक शर्मा के नेतृत्व में वैज्ञानिकों की एक टीम ने विकसित किया है।

डॉ. धीर सिंह, निदेशक-सह-कुलपति, आईसीएआर-एनडीआरआई ने कहा, “सोर्बिटोल नामक रसायन के साथ दूध में मिलावट की खबरें मिली हैं। इसे मिलाने का मुख्य कारण सॉलिड्स-नॉट-फैट (एसएनएफ) सामग्री को धोखे से बढ़ाना है, जिससे दूध के पोषण मूल्य में कमी आती है। डेयरी उद्योग लंबे समय से दूध में इसका पता लगाने के लिए परीक्षण की मांग कर रहा है। अब, हमारे वैज्ञानिक इसे विकसित करने में सक्षम हैं।"

तमिलनाडु में भैंस पालन को बढ़ावा दिया जाएगा

तमिलनाडु कोऑपरेटिव मिल्क प्रोड्यूसर्स फेडरेशन (TNCMPF) राज्य में किसानों के बीच भैंस बछड़ा पालन को बढ़ावा देगा। डेयरी विकास मंत्री मनो थंगराज ने कहा कि भैंस के दूध में उच्च वसा और गैर वसा वाले ठोस पदार्थ होते हैं, जो डेयरी उत्पादों के उत्पादन में बहुत सहायक होंगे।

सहकारी सदस्यों को संबोधित करते हुए श्री थंगराज ने कहा कि सभी प्राथमिक सहकारी समितियों में विशेष आम सभा की बैठक आयोजित की जानी चाहिए। उन्होंने उन बैठकों के लिए एजेंडा भी निर्धारित किया जहां दूध देने वाले किसानों को दूध उत्पादन बढ़ाने के कदमों पर चर्चा करने के लिए प्रोत्साहित किया गया, महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम (MGN REGA) से मजदूरों का उपयोग प्राथमिक सहकारी समितियों के लिए भवनों के निर्माण और बीमा का लाभ उठाने के लिए किया गया मवेशियों के लिए।

उन्होंने कहा कि सरकार एक योजना लागू कर रही है क्योंकि भैंसों की संख्या में भारी गिरावट आई है। “भैंस कठोर और रोग प्रतिरोधी और घरेलू जानवर हैं, इसलिए हमने उन्हें पालने की प्रथा को फिर से शुरू करने का फैसला किया है।

जम्मू-कश्मीर का कुपवाड़ा जिला एक वर्ष में 15.39 करोड़ लीटर दूध का उत्पादन करता है; दुग्ध अधिशेष हो जाता है

मवेशियों की आबादी में पर्याप्त वृद्धि और आधुनिक हस्तक्षेपों को लागू करने के साथ, कुपवाड़ा जिले में दूध उत्पादन प्रति वर्ष 1539,50,000 लीटर के उच्चतम स्तर पर पहुंच गया है, जिससे रुपये की आय हो रही है। ग्रामीण कृषि-अर्थव्यवस्था के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने के अलावा अकेले दूध से 537 करोड़ जिला कुपवाड़ा का दूध अधिशेष बना रहा है।

कुपवाड़ा जिले में वित्तीय वर्ष 2021-22 में दुग्ध उत्पादकता 1323,20,000 लीटर थी जो वित्तीय वर्ष 2022-23 में 1539,50,000 लीटर तक पहुंच गई। कुपवाड़ा जिले की कुल टैग की गई मवेशियों की आबादी 1.58 लाख है, जबकि पोल्ट्री पक्षियों की संख्या प्रति वर्ष 1.45 करोड़ के कुल अंडे उत्पादन के साथ 5.06 लाख को छू गई है।

पशु उत्पादकता बढ़ाने के लिए डेयरी क्षेत्र में कृत्रिम गर्भाधान (एआई) का उपयोग अत्यधिक प्रभावी उपकरण साबित हुआ है। एआई का उपयोग करके, डेयरी किसान उच्च गुणवत्ता वाले सांडों के कुशल उपयोग से लाभान्वित हो रहे हैं। कुपवाड़ा के मुख्य पशुपालन अधिकारी (सीएएचओ) डॉ. मोहम्मद अशरफ ने कहा कि जिले में 2022-23 के दौरान 34731 कृत्रिम गर्भाधान प्रक्रियाएं की गईं जबकि 2021-22 में 33866 एआई प्रक्रियाएं की गईं।

IDDS (इंटीग्रेटेड डेयरी डेवलपमेंट स्कीम) एक प्रमुख योजना है जो न केवल वित्तीय सहायता प्रदान करने पर ध्यान केंद्रित करती है, बल्कि दुग्ध मशीन, 50% सब्सिडी पर बल्क मिल्क कूलिंग यूनिट के साथ-साथ अन्य लाभ प्रदान करके डेयरी उत्पादक का समर्थन करती है। आईडीडीएस की मदद से जिले के ग्रामीण समाज के गरीब एवं सीमांत किसान विशेषकर महिला सदस्य लाभान्वित हुए हैं।

मेघालय के पशुपालन विभाग ने गांठदार त्वचा रोग के प्रकोप को नियंत्रित करने के उपाय किए

राज्य में मवेशियों में गांठदार त्वचा रोग के हालिया प्रकोप से निपटने के लिए मेघालय के पशुपालन और पशु चिकित्सा विभाग ने विभिन्न निवारक उपायों और उपचार रणनीतियों को लागू करके तेजी से कार्रवाई की है। यह रोग, जिसे मच्छरों और मक्खियों के माध्यम से फैलने के लिए जाना जाता है, ने मवेशियों की एक महत्वपूर्ण संख्या को संक्रमित किया है, इसके प्रसार को रोकने और पशुधन आबादी पर प्रभाव को कम करने के लिए विभाग सक्रिय रूप से काम कर रहा है।

मेघालय का पशुपालन और पशु चिकित्सा विभाग गांठदार त्वचा रोग के प्रकोप से निपटने के लिए अथक प्रयास कर रहा है। स्वस्थ पशुओं के टीकाकरण को प्राथमिकता देकर, संक्रमित पशुओं का एंटीबायोटिक दवाओं के साथ इलाज, अलगाव के उपायों को लागू करना और निवारक प्रथाओं को बढ़ावा देना, विभाग का उद्देश्य रोग के प्रसार को कम करना और राज्य में पशुधन उद्योग की सुरक्षा करना है। किसानों से आग्रह किया जाता है कि वे विभाग के दिशा-निर्देशों का पालन करें और अपने मवेशियों की सुरक्षा और आगे के प्रकोप को रोकने के लिए आवश्यक सावधानी बरतें।

अब तक कुल 5,736 मवेशी गांठदार त्वचा रोग से संक्रमित हो चुके हैं। दुर्भाग्य से, इनमें से 39 जानवरों की बीमारी के कारण मृत्यु हो गई है, जो स्थिति की गंभीरता को दर्शाता है। हालांकि, विभाग 2,757 मवेशियों की वसूली की सुविधा देने में सफल रहा है, जो उपचार के उपायों की प्रभावशीलता को प्रदर्शित करता है।

जैसे-जैसे स्थिति विकसित हो रही है, विभाग बारीकी से प्रकोप की निगरानी करने और आवश्यकतानुसार अतिरिक्त उपायों को लागू करने के लिए प्रतिबद्ध है। सरकार, किसानों और पशु चिकित्सकों के बीच सहयोगात्मक प्रयासों के माध्यम से, यह आशा की जाती है कि गांठदार त्वचा रोग के प्रभाव को कम किया जाएगा, जिससे मेघालय में पशुधन की आबादी में तेजी से सुधार होगा।

डेयरी फार्मिंग सुदूर हिमाचल के सिरमौर में आजीविका के अवसर लाती है

हिमाचल प्रदेश के सिरमौर में दूरस्थ गांवों में डेयरी फार्मिंग के माध्यम से आजीविका के अवसर बढ़ाने के लिए शुरू की गई 'गृहिणी की गोशाला' पहल से अब तक सैकड़ों महिलाओं को लाभ मिल चुका है। गौशालाओं का निर्माण करने और ग्रामीण घरों में पशुधन के अवसर प्रदान करने के उद्देश्य से, इस पहल ने सिरमौर में 33 ग्राम पंचायतों को कवर करते हुए पूरे राजगढ़ ब्लॉक को कवर किया। अगस्त 2021 में शुरू हुई, मनरेगा योजना के तहत 1800 से अधिक ऐसी गोशालाएं (गौशालाएं) बनाई गई हैं।

मनरेगा के तहत अब तक ऐसी 1800 से अधिक गोशालाएं बन चुकी हैं, विकासखंड राजगढ़ की 33 पंचायतों में ऐसी 500 और गृहिणी की गोशालाएं चल रही हैं, इन गौशालाओं को पशुधन स्वास्थ्य और अपशिष्ट प्रबंधन को ध्यान में रखते हुए डिजाइन किया गया था|

प्रखंड विकास पदाधिकारी (बीडीओ), राजगढ़ ने बताया कि विकासखण्ड की करीब 2200 महिलाओं ने इसका लाभ उठाया है. इसके परिणामस्वरूप क्षेत्र की गरीब ग्रामीण महिलाओं की आय में वृद्धि हुई है|

राज्य सरकार ने अपने 2023-24 के बजट में डेयरी फार्मिंग को बढ़ावा देने और दूध की खरीद, प्रसंस्करण प्रणाली और आपूर्ति श्रृंखला के बुनियादी ढांचे में सुधार के प्रावधान किए हैं। राज्य सरकार का लक्ष्य यह सुनिश्चित करना है कि दुग्ध उत्पादकों को दूध और दुग्ध उत्पादों के क्षेत्रीय और मौसमी मूल्य में उतार-चढ़ाव से बचाया जाए।

सीईडीएसआई द्वारा प्रमाणित क्षमता निर्माण के माध्यम से गजरौला में दुग्ध उत्पादकों का सशक्तिकरण

सीईडीएसआई द्वारा गजरौला में दुग्ध उत्पादकों के लिए तीन दिवसीय प्रमाणित क्षमता निर्माण कार्यक्रम का सफल आयोजन किया गया। आनंद डेयरी लिमिटेड के उद्योग संघ के सहयोग से इस क्षेत्र में डेयरी किसानों के लिए उत्पादकता और लाभप्रदता बढ़ाने के उद्देश्य से कार्यक्रम आयोजित किया गया था। प्रशिक्षण सत्र 2 जून से 4 जून तक आनंद डेयरी के परिसर में हुआ। वर्ल्ड वाइड फंड इंडिया (डब्ल्यूडब्ल्यूएफ) की जलवायु समाधान साझेदारी के माध्यम से कार्यक्रम के दौरान 35 किसानों की सक्रिय भागीदारी देखी गई। प्रशिक्षण सत्रों के बाद, लाभार्थियों का व्यापक मूल्यांकन किया गया, और सफल मूल्यांकन के बाद, उनके नए अर्जित कौशल और ज्ञान को पहचानते हुए उन्हें प्रमाणपत्र प्रदान किए गए।

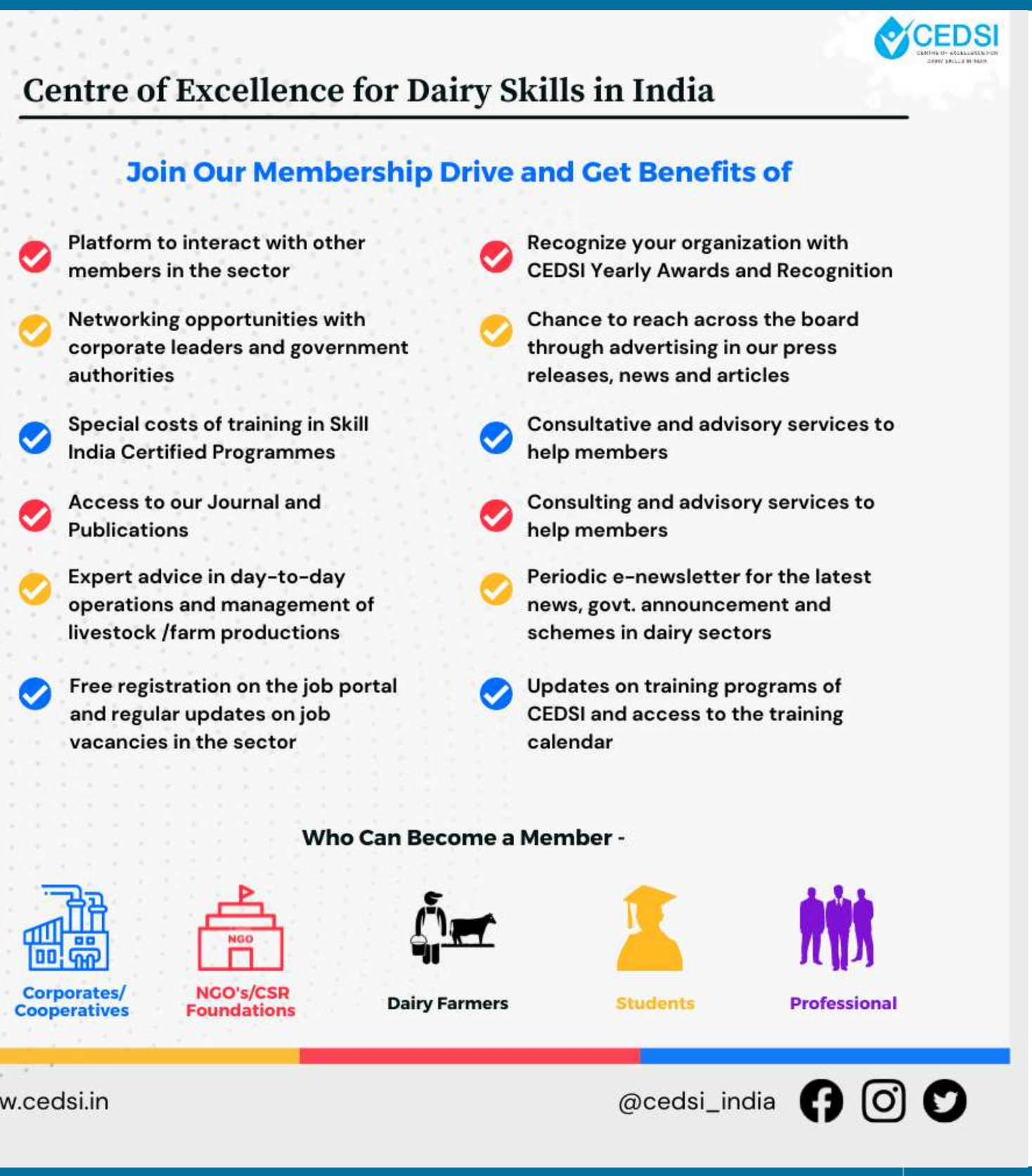

हम कौन हैं?

कौशल विकास और उद्यमिता मंत्रालय के तहत भारतीय कृषि कौशल परिषद (ASCI) के तत्वावधान में काम करने वाली एक स्वायत्त संस्था "भारत में डेयरी कौशल के लिए उत्कृष्टता केंद्र (CEDSI)", किसानों की आजीविका के सशक्तिकरण और बेहतरी में मदद करने के लिए, वेतनभोगी कर्मचारी, और डेयरी मूल्य श्रृंखला में अन्य हितधारक।

सीईडीएसआई सदस्यता उद्योग के नेताओं, नीति निर्माताओं, विकास चिकित्सकों, डेयरी वैज्ञानिकों, शोधकर्ताओं, छात्रों और किसानों को डेयरी उद्योग के लिए आसन्न महत्व के मुद्दों पर बहस और चर्चा करने के लिए एक अनूठा मंच प्रदान करेगी।

CEDSI : रिविविंग स्किल्स एंड जनरेटिंग लाइवलीहुड

किसानों/छात्रों/उद्यमियों के लिए कौशल प्रशिक्षण कार्यक्रम

- डेयरी किसान / उद्यमी
- डेयरी फार्म पर्यवेक्षक
- डेयरी कार्यकर्ता
- पशु स्वास्थ्य कार्यकर्ता
- कृत्रिम गर्भाधान तकनीशियन
- पशु चिकित्सा क्षेत्र सहायक
- पशु चिकित्सा नैदानिक सहायक
- बछड़ा पालन
- कृषि उपकरण तकनीशियन
- डेयरी फार्म अर्थशास्त्र और प्रबंधन
- उद्योग संरेखित प्रमाणन कार्यक्रम (बेरोजगार युवा और छात्र)

एफपीओ उन्मुख प्रशिक्षण कार्यक्रम

- उत्पाद प्रौद्योगिकी और प्रक्रियाओं पर एफपीओ सदस्य अभिविन्यास।
- एफपीओ मार्केट लिंकेज
- एफपीओ शासन
- एफपीओ लेखा

डेयरी कॉरपोरेट्स और सहकारी समितियों के लिए प्रमुख कौशल प्रशिक्षण कार्यक्रम

- चिलिंग प्लांट तकनीशियन
- बल्क मिल्क कूलर ऑपरेटर
- ग्राम स्तरीय दुग्ध संग्रह केन्द्र पर्यवेक्षक
- दूध परीक्षक
- ग्रीन हाउस गैसों का शमन
- दूध की गुणवत्ता आश्वासन
- मिल्क डिलीवरी बॉय
- दूध खरीद और इनपुट पर्यवेक्षक
- डेयरी उद्योग में अपशिष्ट प्रबंधन
- चारा और चारा प्रबंधन
- स्वच्छ दूध उत्पादन
- निर्णय समर्थन प्रणाली / डेटा विश्लेषिकी

सेंटर ऑफ़ एक्सीलेंस फॉर डेरी स्किल्स इन इंडिया